ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मन्त्रश्रुत्यं चरामसि। सामवेद 176
हम वेद मन्त्र के अनुसार आचरण करें।
We should behave & Perform in accord with the advice of Vedic hymns.

वर्ष 37, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 अप्रैल, 2014 से रविवार 13 अप्रैल, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

जन्मदिवस – श्री रामनवमी (8 अप्रैल) पर विशेष

## मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम का प्रेरक स्वरूप

– डॉ. महेश विद्यालंकार

इस देश का सौभाग्य है कि यहां अनेक ऋषि-मुनि, सन्त-योगी, तपस्वी, त्यागी और बलिदानी महापुरुषों ने जन्म लिया है। महापुरुष किसी देश की सबसे बड़ी सम्पदा होते हैं। उन्हीं महापुरुषों की परम्परा में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का स्मरण और नाम बड़ी श्रद्धा, भक्ति, सम्मान तथा आदर से लिया जाता है। श्रीराम भारत के रोम-रोम और कण-कण में रमे हुए हैं। भारतीय संस्कृति पर श्रीराम की अमिट छाप है। श्रीराम का जीवन भारत का आदर्श जीवन माना जाता है। श्रीराम भारतीय जन-जीवन में धर्मभावना के प्रतीक हैं। श्रीराम एक आदर्श महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व महान् था। उनमें मानवोचित और देवोचित गुण थे। इसीलिए वे "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहलाए। हजारों वर्षों से कोटि-कोटि जन-मानस के प्रेरक राम का जीवन आदर्श एवं अनुकरणीय है। श्रीराम का चरित्र और आदर्श जीवन भारत की सीमाओं को लाँघकर विदेशियों के लिए भी शान्ति, प्रेरणा और नवजीवन का दाता बनता जा रहा है। आज शिक्षित अशिक्षित सभी उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते राम का नाम लेकर ही अपनी धार्मिक भावना प्रकट करते हैं। राम का यहाँ तक महत्त्व है कि शव को श्मशान भूमि तक ले जाते समय भी राम के नाम का उच्चारण करते हुए जाते हैं।

श्रीराम का प्रेरक चरित्र, जीवन, गुण, कर्म, स्वभाव और आदर्श सार्वकालिक, सार्वजनिक, सार्व देशिक और सार्वभौम हैं। वे हर युग में नित्य नूतन, प्रेरक, उद्बोधक एवं सन्मार्ग- दर्शक हैं। आज भी श्रीराम के जीवन की घटनाएँ एवं आचरण भूली-भटकती, लक्ष्यविहीन हिन्दूजाति के लिए प्रकाशस्तम्भ हैं। चाहे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक, आर्थिक या अन्तर्राष्ट्रीय कैसी भी समस्याएँ हों, हर जगह राम की रीति, नीति, प्रीति एवं व्यवहार उनके समधान का मार्ग प्रशस्त करती हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए प्रेरक तीर्थस्थल है। राम युगों से जीवन्त चेतना के पुञ्ज हैं। उनके द्वारा दर्शित आदर्शों का ही कुछ विकृत रूप आज भारतीय समाज है। केवल उनके आदर्श चरित्र का विकृत, भोंडा और अश्लील हरकतों से भद्दा प्रदर्शन व रामलीलाएँ कर लेना हमारी बौद्धिक दरिद्रता के परिचायक हैं। हमें आज इस भोगी, विलासी, भौतिक एवं तेजी से टूटते सभी आदर्शों, परम्पराओं, मान्यताओं तथा अनैतिक मूल्यों के वातावरण में युगपुरुष श्रीराम के आदर्शों एवं मान्यताओं की व जीवन-मूल्यों की महती आवश्यकता है। इन आदर्शों को अपनाकर ही यह हिन्दू (आर्य) जाति बच सकती है। राम के जीवन की प्रत्येक घटना के पीछे समग्र मानव-जाति के लिए अमर सन्देश भरे पड़े हैं। आओ, हम उन तक पहुँचें, उन्हें समझें व समझाएँ और जीवन में उतारें, तभी राम का सच्चा स्मरण सार्थक होगा।

रामायण के आरम्भ में श्रीरामचन्द्र जी के जन्म का वृत्तान्त है। राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया। इसमें अनेक विद्वानों, ब्राह्मणों और ऋषि-मुनियों ने भाग लिया। यज्ञ सम्पन्न हुआ। दशरथ का घर सन्तान-सुख से घर भर गया। इससे बोध होता है व प्रेरणा मिलती है कि यज्ञ मानव की सभी कामनाओं की पूर्ति का श्रेष्ठ साधन रहा है। यज्ञ हमारी संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है। यज्ञ के द्वारा अनेक रोग दूर होते हैं और वातावरण शुद्ध व पवित्र बनता है। यज्ञ की अनन्त महिमा है। वेद कहता है – यज्ञ से आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन-स्वास्थ्य एवं मोक्ष तक प्राप्त किया जा सकता है।

आज के मानव ने यज्ञ करना और कराना छोड़ दिया है। सन्तान के लिए मन्दिरों-मस्जिदों, देवी-देवताओं और पाखंडी साधुओं के चक्कर में पड़कर वह दु:ख उठा रहा है। राम का चरित्र प्रेरणा देता है कि मूर्खतापूर्ण बातों को छोड़कर यज्ञ व श्रेष्ठ कर्म करो, सन्तान के लिए त्याग, संयम, नियम आदि का पालन करो।

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न बड़े हुए तो गुरुकुल में शिक्षा के लिए भेजे गए, जहाँ सब को समान शिक्षा मिली। कोई भेदभाव नहीं, धनवान् और निर्धन का कोई प्रश्न नहीं था। विद्या जीवन को उच्च, श्रेष्ठ और महान बनाती है। आज के समाज में शिक्षा का अर्थ बदल गया है। वर्तमान शिक्षा में असमानता, महंगापन, आदर्शहीनता, जीवन से दूरी, अपनी सभ्यता संस्कृति से घृणा आदि अवगुण आ रहे हैं। राम का चरित्र इस भयंकर दिशाहीन शिक्षा-जगत् को चेतना एवं प्रेरणा दे रहा है कि शिक्षा सब के लिए एक जैसी हो। गुरु की दृष्टि में धनवान्- निर्धन विद्यार्थी बराबर हों। शिक्षा चरित्र, जीवन और संस्कारों से जुड़ी हो, शिक्षा में मानव को मानव बनाने वाले विचार हों। शिक्षा-स्थल प्रकृति की गोद में हों जिससे विद्यार्थी विषय-वासना, शृंगार और दुर्व्यसनों से बच सकें। शिक्षा से ही राम के चरित्र में दैवीय गुणों का विकास हुआ। शिक्षा के बाद राम यज्ञ के रक्षार्थ महर्षि विश्वामित्र के साथ वन जाते हैं। इस घटना से संकेत मिलता है कि प्राचीनकाल में क्षत्रिय बालक कितने बलशाली, पराक्रमी, निर्भीक और ब्रह्मचर्य के व्रती होते थे। छोटी-सी आयु में राम और उनके भाई ने ताड़का राक्षसी और कई उपद्रवी राक्षसों को मारा। बड़ी वीरता, दृढ़ता और निर्भयता से यज्ञ की रक्षा की। इससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमारे

बच्चों में ब्रह्मचर्य, बल, तेज तथा क्षात्रधर्म के प्रति लगाव हो, अन्याय का विरोध तथा उसे मिटाने की भावना जागृत हो। उनके जीवनों में निर्भीकता, दृढ़ता, साहस, वीरता और श्रेष्ठ कर्मों की रक्षा के लिए उत्साह होना चाहिए। उन्हें तपस्वियों, विद्वानों, धार्मिक व्यक्तियों की रक्षा के लिए संकल्पी व तत्पर रहना चाहिए। सामने कठिन-से-कठिन कार्य हो तो भी हँसते-मुस्कराते हुए आन-बान-शान के साथ आगे बढ़ते जाना

– शेष पृष्ठ 2 व 4 पर

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के तत्वावधान में
**आसाम एवं नागालैंड में संचालित संस्थाओं का दौरा**
सूचना एवं चित्र पृष्ठ 5 पर

महर्षि दयानन्द राजधर्म और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देते हुए कहते हैं –

"...चाहे कोई कितना भी करे... परन्तु जो स्वदेशी राजा होता है, वह सर्वोपरि सर्वोत्तम होता है..."

**विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र का उत्सव : लोक सभा निवार्चन : राष्ट्रयज्ञ में आहुति अवश्य दें**

आओ! महर्षि के निर्देशानुसार सशक्त भारत का निर्माण करें। आओ देश और समाज के हित में मतदान करें
– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा

आओ भारत को पुन: गुरुत्त्व प्रदान करें। भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करें, आओ सुखद भविष्य के लिए मतदान करें
– आचार्य बलदेव, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

वेद-स्वाध्याय

# पारमेश्वरी शक्ति

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

**अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।** ऋग्वेद 10/125/3

**अर्थ**—( **अहम् राष्ट्री** ) मैं जगद्-रूप राष्ट्र की स्वामिनी हूँ ( **वसूनाम् संगमनी** ) समस्त धनों को प्राप्त कराने वाली ( **यज्ञियानाम्** ) श्रेष्ठ कर्मों की ( **प्रथमा चिकितुषी** ) प्रमुख रूप में चेताने वाली हूँ ( **भूरिस्थात्राम्** ) जड़-चेतन सभी बहुत प्रकारों से विद्यमान ( **भूरि आवेशयन्तीम्** ) अनेक रूपों में प्रविष्ट हुई ( **ताम् माम्** ) उस मुझको ( **देवाः** ) विद्वान् ( **पुरुत्रा व्यदधुः** ) बहुत रूपों में वर्णन करते हैं।

इस सूक्त को 'वागाम्भृणीय सूक्त' कहते हैं। अम्भृण का अर्थ महान् और वाक्शक्ति का नाम है। परमेश्वर सर्व शक्तिमान् है और उसकी शक्ति का नाम वागाम्भृणी है। अर्थ को समझने के लिये उत्तम पुरुष के स्थान पर प्रथम पुरुष का प्रयोग कुछ स्थानों पर करना ठीक रहेगा।

**१. अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्**—परमेश्वर ने ही सब वसुओं का निर्माण कर उनको धारण किया है। पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा नक्षत्र ये आठ वसु हैं। सभी प्राणी इनमें बसते हैं अथवा ये वास के हेतु हैं इसलिये इन्हें 'वसु' कहते हैं। पारमेश्वरी शक्ति ही सर्वत्र विराजमान हो रही है। वही इन वसुओं की रचना और उनको गतिप्रदान कर आकाश में अपनी-अपनी कक्षाओं में भ्रमण करा रही है। **स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्** (यजुः० १३.४) वही सूर्यादि और अन्य लोकों को धारण कर रही है। सभी लोक परस्पर एक दूसरे की आकर्षण शक्ति के कारण अपनी कक्षाओं में घूम रहे हैं। पृथ्वी अपनी कीली पर चौबीस घण्टे में एक बार चक्र पूरा कर लेती है। इससे दिन-रात बनते हैं। इसी भाँति वर्ष में एक बार सूर्य के चारों ओर घूम जाती है जिसके कारण ऋतुओं का निर्माण होता है। चन्द्रमा पृथिवी से चार लाख, बत्तीस हजार मील दूर है और एक मास से कुछ न्यून समय में पृथिवी का चक्र पूरा करता है। इसी भाँति अन्य ग्रह सूर्य के चारों ओर घूम रहे हैं और उनके चन्द्रमा उनके चारों ओर गति कर रहे हैं। यह एक ब्रह्माण्ड कहलाता है। हमारी आकाश-गंगा में लाखों पृथिवी जैसे ग्रह हैं जिनमें जीवन की सम्भावना है। ऐसी लाखों आकाश-गंगायें खगोलविदों ने दूरबीन की सहायता से खोज ली हैं। इन सबका अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमण, धारण और आकर्षण वही पारमेश्वरी शक्ति कर रही है।

**२. चिकितुषी प्रथम यज्ञियानाम्**—यज्ञिय पदार्थों में मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ। मेरा एक नाम यज्ञ भी है। **तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः** (यजुः० ३१.६) मैंने ही प्रकृति के परमाणुओं से अपनी ईक्षण-क्रिया द्वारा सृष्टि की रचना की है। यज्ञ रूप होने से मैं सबको यज्ञियकर्मों का ज्ञान भी कराती हूँ। वेद मेरी ही वाणी है जिसका उपदेश मैंने चार ऋषियों को सृष्टि के आदि में दिया। जिसके अनुसार लोग आचरण कर भोग-अपवर्ग की प्राप्ति कर सके। सृष्टि में सर्वत्र यज्ञ हो रहा है। नदियाँ पर्वतों से निकल कर प्यासी धरती की प्यास बुझा रही हैं। समुद्र से बादल उठकर पर्वतों पर बरसते हुये नदियों को जल प्रदान कर रहे हैं। नदियाँ सागर में जाकर मिल रही हैं। मनुष्यों और दूसरे प्राणियों द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाय आक्साइड को वृक्ष अपना भोजन बना आक्सीजन छोड़ रहे हैं। वही आक्सीजन प्राणियों को जीवन प्रदान कर रही है। जिधर भी देखें, सर्वत्र सृष्टि में यज्ञ चल रहा है। और इसे देख आप लोग भी यज्ञिय कार्यों को करते हुये जड़-चेतन सबकी सुरक्षा करो यही मेरा सन्देश है। हे मनुष्यो! जब तुम किसी पापकर्म, असत्य, हिंसा, चोरी, व्यभिचार आदि में प्रवृत्त होते हो तब मैं ही तुम्हारे हृदय में विराजमान होती हुई भय, शंका, लज्जा, आदि के भाव प्रकट कर तुम्हें पाप-पंक में फंसने से सावधान करती हूँ। मेरा दण्ड-विधान भी इसीलिये है कि लोग पाप कर्मों से डर शुभ कर्म करते हुये मोक्ष की प्राप्ति करें। मेरी चेतावनी से भी जब लोग पापकर्मों से नहीं हटते तब मैं अपना रौद्ररूप अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, अतिशीत, अतिग्रीष्म और महामारी के रूप में दिखलाती हूँ जिनसे आहत होकर सभी जन **'त्राहिमाम्'** कर उठते हैं। इतना होने पर भी मैं करुणामयी देवी हूँ। यदि लोग दण्डभय से सन्मार्ग पर चलने लगते हैं तो वे फिर मेरी कृपा के अधिकारी बन जाते हैं।

**३. ताम् भूरिस्थात्राम् भूरि आवेशयन्तीम्**—पारमेश्वरी शक्ति ही सृष्टि के कण-कण में विराजमान हो उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय कर रही है। उसी के भय से सूर्य तप रहा है। पृथिवी आदि लोक अपनी कक्षाओं में घूम रहे हैं। जिधर भी देखें उधर वही शक्ति सर्वत्र व्याप्त हो रही है। विद्युत् का गर्जन, मेघों का वर्षा करना, समुद्र में ज्वार-भाटा, वृक्षों में फूल-फल, नदियां-नाले, वन-पर्वत और नाना प्रकार के जीव जन्तु सभी उसी रचनाकार की कृतियाँ हैं जिन्हें देख अनायास ही उस महान् रचनाकार का स्मरण हो जाता है। किसी को श्रेष्ठ मनुष्य का जन्म, किसी को पशु-पक्षी और किसी को कीट-पतंग का शरीर भी तो उसी ने दिया है। पत्ते-पत्ते की कतरन में उसकी अद्भुत कारीगरी दिखलाई देती है।

**४. माम् देवा व्यदधुः पुरुत्रा**—मेरी रचना की विविधता को देख विद्वान् लोग मुझे अनेक नामों से पुकारते हैं। **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति** (ऋ० १.१६४.४६) सृष्टि की उत्पत्ति करने से ब्रह्मा धारण करने से विष्णु और प्रलय करने से रुद्र मेरे ही नाम हैं। मेरे अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव होने से नाम भी अनन्त हैं। परन्तु मेरा मुख्य निज नाम 'ओ३म्' है जिसका जप और अर्थ-चिन्तन करने वाले का निश्चय से कल्याण होता है। सर्वशक्तिमान् होने के कारण मुझे अपनी कार्य-सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय के लिये किसी दूसरे सहायक की आवश्यकता ही नहीं होती। इसी भाँति जीवों के कर्म फल की व्यवस्था भी मेरे ही अधीन है।

हे मनुष्यो! मेरे गुण, कर्म, स्वभाव को जान तुम शुभ कर्मों का आचरण करते हुये दुःखों से छूट मोक्ष पद को प्राप्त करो और सावधान हो सुनो—

**अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।**

ऋ. 10/125/4

इतने प्रमाणों के उपस्थित होने पर भी जो मेरी सत्ता को नहीं मानते हैं, उनका विनाश ही होता है। मैं तुम्हें सत्य वचन कहती हूँ। तुम सावधान होकर मेरी बात को सुनो।

- क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

चाहिए और अपने कर्त्तव्य-पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए।

उसके बाद राम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ मिथिला जाते हैं। यहीं विवाह का वर्णन है। उस काल में स्वयंवर की प्रथा थी। नारी को अपना जीवन-साथी चुनने का पूर्ण अधिकार था। वर और वधू ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गृहस्थाश्रम को सुख से व्यतीत करते थे। विवाह भोग-विलास के लिए न होकर श्रेष्ठ कर्मों और सन्तान-प्राप्ति के लिए होता था। राम के विवाह के आदर्श से आज के मानव को प्रेरणा और आदर्श मिलता है कि विवाह गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर करें। विवाह किसी लालच या स्वार्थ से प्रेरित होकर न करें। वर-वधू में समानता हो। बाल-विवाह का विरोध करें। नारी भी पुरुष के समान अपने अधिकार के लिए स्वतन्त्र है।

विवाहोपरान्त राम के राज्याभिषेक का उल्लेख है, परन्तु कैकेयी के आदेश से राम का वनगमन होता है। श्री राम के असहज वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि कैकेयी ने जो मंथरा की सलाह मानी, वह प्रसंग आज के नर-नारी को सचेत करता है कि नीच, बुरे विचारों, कुसंस्कारों और कुकर्म वाले की संगति सदैव पतन और दुःख का कारण बनती है। कुसंग से कार्य बिगड़ता है। सत्संग से व्यक्ति सुधरता है। आज बुरे विचारों, कर्मों तथा कुसंगति के कारण ही हमारा पतन हो रहा है।

कैकेयी ने मंथरा की बात मानकर अपना सुहाग नष्ट किया। जगत् में अपयश लिया। जिस पुत्र के लिए अधर्म किया, उसने भी बुरा कहा। जो लोग अधर्म तथा गलत तरीके से धनोपार्जन करते हैं उनका साथ सन्तानें नहीं देती हैं।

राजा दशरथ ने मृत्यु को स्वीकार किया किन्तु वचन से विचलित नहीं हुए। इससे आज के मानव को वचन-निर्वाह की शिक्षा मिलती है कि दशरथ ने अपने प्राण-प्रिय राम को वनवास दिया किन्तु अपने वचन से डगमगाए नहीं। तभी तो रघुकुल का कीर्तिमान् वाक्य सर्वत्र उच्चारित होता है -

**"रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाएँ पर वचन न जाई।"**

राम के वनगमन का प्रसंग बड़ा ही मार्मिक और कारुणिक है। राम आदर्श पुरुष थे। उन्हें न राजतिलक होने का हर्ष था, न वन जाने का विषाद। राम का कथन है - "मैं पिता की आज्ञा से समुद्र में कूदने, पहाड़ से छलाँग लगाने और अग्नि में प्रवेश करने के लिए हमेशा तैयार हूँ।' ये वाक्य राम की पितृभक्ति को युगों तक जीवित बनाए रखेंगे। आज मानव-समाज में विकट समस्या है कि बच्चे अपने माता-पिता का कहना नहीं मानते। अनुशासन में नहीं रहते। उनकी सेवा-शुश्रूषा नहीं करते। उनके अनुकूल नहीं चलते। इस समस्या के समाधान में राम का चरित्र आज की युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। राम ने कोई तर्क-वितर्क नहीं किया। कोई अपने अधिकार की माँग नहीं की, मात्र कर्त्तव्य देखा।

ऐसे ही जो वृद्धजन हैं, वे भी अपने कर्त्तव्य को समझें, और युवाजन भी अपने कर्त्तव्य का पालन करें तो दुःखों और समस्याओं से छूटा जा सकता है।

इसी प्रसंग में सीता का साथ में वन जाना इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ देता है। वनवास राम को मिला था, सीता को नहीं, फिर भी सीता पति की अनुगामिनी बनी। सीता का यह कथन - "पतिदेव ! यह कैसे हो सकता है कि आप तो वनों में रहें और मैं अयोध्या के महलों में अमन-चैन से रहूँ, आपके बिना मेरे लिए स्वर्ग का वैभव भी तुच्छ है। मैं छाया की भांति आपके साथ रहूँगी।" सीता का यह पवित्र पतिव्रत धर्म आज की भोग-विलास तथा शृंगार में फँसी नारी को युग-युग तक प्रकाश एवं जीवन दे सकता है। सीता ने अधिकार नहीं, कर्त्तव्य को देखा। हमारी संस्कृति में कर्त्तव्य अधिकार से ऊँचा माना गया है। जहां कर्त्तव्य-बोध है, वहां शान्ति, प्रसन्नता व सन्तोष है। जहाँ अधिकार की भावना है, वहाँ दुःख, कलह व अशान्ति है।

इसी सन्दर्भ में लक्ष्मण का भाई हेतु वनगमन भाइयों की प्रीति का उत्कृष्ट प्रमाण है। ऐसी मधुर, प्रगाढ़ एवं त्यागमयी प्रीति आज के मानव को, जो भाई-भाई के रक्त का प्यासा हो रहा है, बहुत कुछ सोचने के लिए दे सकती है। श्रीराम तथा लक्ष्मण का प्रेम भातृ-प्रेम का आदर्श उदाहरण माना जाता है। टूटते हुए पारिवारिक सम्बन्धों को राम, लक्ष्मण और भरत जैसा प्रेमपूर्ण त्याग ही जोड़ सकता है।

- शेष पृष्ठ 4 पर

# आर्यसमाज और वैदिक धर्म

- मनमोहन कुमार आर्य

किसी के पूछने पर जब हम स्वयं को आर्य समाजी कहते हैं तो वह हमें प्रचलित अनेक मतों व धर्मों में से एक विशिष्ट मत या धर्म का व्यक्ति समझता है। पूछने वाला हमें कहता है कि अच्छा तो आप आर्य समाजी हैं? लेकिन यदि उन्हें कोई स्वयं को हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई या मुसलमान बताये तो फिर यह सुनने को नही मिलता कि अच्छा तो आप अमुक-अमुक हैं। आर्य समाज के बारे में यह भावना क्यों है? इसका कारण है कि आर्य समाज कोई सामान्य मत, धर्म, समाज या संस्था नहीं है अपितु एक विशेष मत या धर्म का अनुसरण व प्रचार-प्रसार करने वाली संस्था है। ऐसा इसलिए है कि विगत 139 वर्षों में धर्म व समाज के क्षेत्र में जो कार्य महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियों ने किया है, वह अन्य किसी संस्था, समाज, मत व सम्प्रदाय ने नहीं किया। हम आर्य समाजी स्वयं को वैदिक धर्मी मानते हैं परन्तु समाज में हमारी पहचान वैदिक धर्मी के रूप में शायद नहीं बन सकी और यदि बनी है तो उन जानकर लोगों की संख्या बहुत न्यून है। हमारी वास्तविक पहचान आर्य समाजी के रूप में ही आज है। दूसरी पहचान लोग हमें मूर्ति पूजा, अवतार वाद, राम व कृष्ण आदि का ईश्वर होना, मृतक श्राद्ध, इन सबके विरोधी के रूप में है। हमारा प्रयास होना चाहिये कि लोग हमें वैदिक धर्मी मानें और हमारे आर्य समाजी होने के यथार्थ अर्थ को जानें व स्वीकार करें। हम समझते हैं कि हम वैदिक धर्मी तो हैं ही, इसके साथ आर्य समाजी भी अवश्य ही हैं। हमारे आर्य समाजी होने का अर्थ हमारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आन्दोलनकारी होने का गुण, स्वभाव व कार्य है। दूसरे मत व सम्प्रदायों के मनुष्यों में हमें यथार्थ रूप में जानने की इच्छा, प्रवृत्ति व जिज्ञासा नही है अन्यथा वह जानते कि हम वैदिक धर्मी, वेदानुयायी या आर्य समाजी किस प्रकार से हैं? हमें यह लगता है कि पौराणिक व अन्य मतावलम्बियों को पौराणिक, सनातन धर्म व वैदिक धर्म में जो अन्तर या समानतायें हैं, वह ज्ञात नहीं है। ज्ञात तो तब हों जब उन्हें सदुपदेश प्राप्त हों या वह निष्पक्ष होकर सदग्रन्थों का स्वाध्याय करें। न केवल अपने मत के ग्रन्थों को ही पढ़े अपितु अन्य मत व सम्प्रदायों के ग्रन्थों को भी पढ़ें और उनमें सत्य व असत्य को जानने का प्रयास करें। वैदिक धर्मी आर्य समाजियों से इतर लोगों में यह बात नहीं है। अत: वह धर्म, मत, सम्प्रदाय आदि के ज्ञान के मामले में, व उनके तथ्यपरक ज्ञान में, कोरे हैं। हम यह भी कह सकते कि हमारे पौराणिक बन्धु व अन्य मतों के अधिकाश लोग ईश्वर के सत्य स्वरूप से अपरिचित होकर उससे विमुख होने के कारण सत्य व यथार्थ ज्ञान से दूर हैं व हो गये हैं। उनमें से कुछ या अधिकांश में केवल दम्भ दिखाई देता है परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि वह, अपने अज्ञान व स्वार्थ के कारण, धर्म के वास्तविक रूप को नहीं जानते व धर्म व मत-मतान्तरों की उन्नति व पतन के इतिहास से प्राय: अनभिज्ञ व शून्य हैं। हमें लगता है कि ईसाई पादरियों व मुस्लिम मौलवियों को आर्य समाजी होने का अर्थ पौराणिकों से कुछ अधिक पता है। वह जानते हैं कि यह न केवल वेदों के ही अपितु पौराणिकों के भी रक्षक हैं और इनकी उपस्थिति में वह हमारे पौराणिक भाईयों को हानिकारक तिरछी नजर से नहीं देख सकते।

पहला प्रश्न तो यह है कि वैदिक धर्म है, क्या? वैदिक शब्द 'वेद के अनुसार' अर्थ का बोध कराता है। धर्म तो धर्म है ही। धर्म किसी पदार्थ के गुणों को कहते हैं। जैसे कि अग्नि का मुख्य गुण रूप-दर्शन, दाह, जलाना, गर्मी देना व प्रकाश देना है। वायु का गुण स्पर्श, प्राण वायु, हल्की गैसों को ऊपर उठाना व भारी गैसों को नीचे रखना आदि गुण है। यह गुण ही अग्नि व वायु के धर्म कहे जाते हैं। जल में शीतलता तथा ऊपर से नीचे बहने की प्रवृत्ति या गुण है। इसी प्रकार मनुष्य के क्या गुण होने चाहियें? जो गुण होने चाहियें, वही गुण, मनुष्य के धर्म कहलाते हैं। मनुष्य को सत्य बोलना चाहिये, माता-पिता की अवज्ञा नहीं करनी चाहिये, ईश्वर की उपासना व वायु की शुद्धि के लिए अग्निहोत्र यज्ञ करना चाहिये, आत्मा व शरीर की उन्नति के लिए योगाभ्यास करना चाहिये, ज्ञान की उपलब्धि के लिए विद्वानों की संगति करनी चाहिये, सुखी स्वस्थ जीवन व दीर्घ आयु के लिए गोपालन व गोसंवर्धन के साथ गोरक्षण करना चाहिये। ऐसे अनेक गुण मनुष्यों में होने चाहियें। यह सब प्रकार के गुण जो मनुष्य के कर्त्तव्य भी कहाते हैं, मनुष्य का धर्म हैं। अब आर्य समाज पर आते हैं कि आर्य समाज क्या है? सरल अर्थ है कि एक ऐसा समाज जिसके अनुयायियों में श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव हों। आर्य श्रेष्ठता का द्योतक होने के साथ वेदों द्वारा समर्थित मनुष्य के गुणों, कर्त्तव्य व धर्म के धारण करने को कहते हैं। इससे स्पष्ट हो गया कि वेदानुसार श्रेष्ठ गुणों को धारण करने वाले मनुष्य व उनका समाज, की संज्ञा आर्य समाज है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि आर्य समाज अपने आप में एक धर्म भी है। यह बात अलग है कि आर्य समाज के अनुयायी शत-प्रतिशत वेद के अनुसार जीवन व्यतीत करते हों। अत: आर्य समाज एक प्रकार से वैदिक धर्म का पर्याय बन गया है। वेद एक प्रकार से मानवीय गुणों की आचार संहिता है और आर्य समाज उन गुणों का प्रचारक संगठन व आन्दोलन है।

आइये, अब वैदिक धर्म व आर्य समाज के विषय में परस्पर सम्बन्ध पर विचार करते हैं। आर्य समाज की स्थापना वैदिक धर्म या वैदिक मूल्यों के प्रचार व प्रसार के लिए की गई है। इसको यदि और स्पष्ट कहें तो कह सकते हैं कि संसार के सभी मत-मतान्तरों में पूर्ण सत्य एकमात्र वैदिक मत ही था व है और परीक्षा करके इस तथ्य को जानकर, विश्व के सभी मनुष्यों को सामने रखकर वेदों का समस्त वसुन्धरा पर प्रचार-प्रसार के लिए महर्षि दयानन्द ने अपने अनुयायियों के परामर्श, मांग व प्रार्थना पर आर्य समाज को स्थापित किया। आर्य समाज विश्व साहित्य में पहली बार प्रयोग हुआ शब्द है। महर्षि दयानन्द का अध्ययन अत्यन्त विशाल व बहुआयामी था। उन्होंने जब यह निश्चित कर लिया कि वेदों के वर्तमान व भविष्य में प्रचार व प्रसार के लिए एक संगठन होना चाहिये जिससे अज्ञान, अन्धविश्वासों, कुरीतियों व अज्ञान-असत्य मान्यताओं को वर्षा ऋतु में झाड़-झंकार की तरह से बढ़ने का अवसर न मिले और जो झाड़-झंकार धर्म के नाम पर उग गई है, उसे उखाड़ कर दूर कर दिया जाये जिससे अच्छी खेती हो, सात्विक अन्न उत्पन्न हो और संसार में सुख-शान्ति व समृद्धि का वास हो। उन्होंने इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए इसके नाम पर विचार किया। हम समझते हैं कि उन्होंने अनेकों नामों पर विचार किया होगा। यह नाम 10-20 से लेकर और अधिक भी हो सकते हैं परन्तु उन्हें सबसे अधिक आर्य समाज नाम ही सार्थक, यथानाम तथा गुण के अनुरूप लगा और उन्होंने स्वयं इसे निश्चित कर अपने अनुयायियों को सूचित किया जिसे सभी ने एकमत होकर सहर्ष स्वीकार किया। बड़े आश्चर्य की बात है कि हमारे अनेक देशवासियों को आर्य समाज जैसे सुन्दर नाम से चिढ़ क्यों है? हमें यह उनकी अज्ञानता व अन्ध विश्वास ही लगता है। वह अपनी अज्ञानता दूर क्यों नहीं करते, समझ में नहीं आता। हमें तो लगता है कि जिन्हें आर्य समाज नाम अच्छा नहीं लगता वह सब लोग अज्ञानी है व उन्हें अज्ञानता प्रिय है। अन्यथा वह आर्य समाज का अर्थ, उसका भाव, इसका पवित्र उद्देश्य जानकर इसके अनुरूप स्वयं को तैयार करते और आर्य समाज के उद्देश्य को पूरा करने में आर्य समाज के अनुयायियों को न केवल सहयोग करते अपितु स्वयं आर्य कहलाने में गौरवान्वित होते और आर्य समाज के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कोई कसर न छोड़ते। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आज के आधुनिक समय में मनुष्य वस्त्र तो नये नये पहनता है। भोजन के पदार्थ पूर्व से भिन्न बनने आरम्भ हो गये जिसे हमारे पौराणिक व अन्य सभी बन्धु प्रसन्न होकर प्रयोग करते हैं, पुरानी वस्तुओं को छोड़कर विज्ञान द्वारा आविष्कृत नई-नई वस्तु का प्रयोग करने में एक क्षण नहीं लगाते परन्तु आर्य समाज और इसके द्वारा प्रदत्त जीवन को सुखी, प्रसन्न, समृद्ध, सफल व उन्नत बनाने वाली जीवन शैली के प्रति उनमें न केवल उपेक्षा का भाव है अपितु जीवन को बर्बाद करने वाली जीवन शैली के अनुगामी बन रहे हैं, घोर आश्चर्य?

समग्र वेदों में दी गई शिक्षा के आचरण से सारे संसार के मनुष्य जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। इस कारण सर्वत्र प्रचार-प्रसार द्वारा इस वैदिक मत की सार्वभौमिक रूप से स्वीकारोक्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की गई है। इससे यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि आर्य समाज वेद व वैदिक मान्यताओं का मानव धर्म के रूप में प्रचारक होने से पूरी तरह से वेदों का पूरक है। यदि आर्य समाज नहीं होगा तो वैदिक मत का प्रचार-प्रसार न होने से इसमें अज्ञान, अन्धविश्वास व कुरीतियां आती-जाती रहेंगी और फिर सत्य मत का अनुसंधान कठिन हो जायेगा। आज हम ईसाई व इस्लाम मतों को देखते हैं कि वह अनेक संगठन बनाकर अनेक प्रकार से अपने मत का प्रचार करते हैं। वह प्रचार तो करते हैं परन्तु वह अपने मत की मान्यताओं की सत्यता की पुष्टि पर ध्यान नहीं देते। उन्होंने अपने अन्दर ऐसा कोई संगठन गठित नहीं किया है जो उनके मत की मान्यताओं के सत्य होने की पुष्टि करे। ऐसा भी कोई संगठन नहीं है जो वेद, वैदिक साहित्य व अन्य मत व मजहबों के ग्रन्थों से तुलना कर दूसरे मत की अच्छी व सत्य बातों को बताये व अपनी सत्य व असत्य, अच्छी व बुरी बातों को सामने लाये। उनकी तो मान्यता है, जिसे असिद्ध होने से कपोल-कल्पित ही कह सकते हैं, कि उनके मत की पुस्तकें पूर्णतया सत्य हैं। बिना किसी बात को तर्क व प्रमाणों से

- शेष पृष्ठ 6 पर

***.....आर्य समाजी स्वयं को वैदिक धर्मी मानते हैं परन्तु समाज में हमारी पहचान वैदिक धर्मी के रूप में शायद नहीं बन सकी और यदि बनी है तो उन जानकर लोगों की संख्या बहुत न्यून है। हमारी वास्तविक पहचान आर्य समाजी के रूप में ही आज है। दूसरी पहचान लोग हमें मूर्ति पूजा, अवतार वाद, राम व कृष्ण आदि का ईश्वर होना, मृतक श्राद्ध, इन सबके विरोधी के रूप में है। हमारा प्रयास होना चाहिये कि लोग हमें वैदिक धर्मी मानें और हमारे आर्य समाजी होने के यथार्थ अर्थ को जानें व स्वीकार करें। हम समझते हैं कि हम वैदिक धर्मी तो हैं ही, इसके साथ आर्य समाजी भी अवश्य ही हैं। हमारे आर्य समाजी होने का अर्थ हमारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आन्दोलनकारी होने का गुण, स्वभाव व कार्य है। दूसरे मत व सम्प्रदायों के मनुष्यों में हमें यथार्थ रूप में जानने की इच्छा, प्रवृत्ति व जिज्ञासा नही है अन्यथा वह जानते कि हम वैदिक धर्मी, वेदानुयायी या आर्य समाजी किस प्रकार से हैं?..... एक ऐसा समाज जिसके अनुयायियों में श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव हों। आर्य श्रेष्ठता का द्योतक होने के साथ वेदों द्वारा समर्थित मनुष्य के गुणों, कर्तव्य व धर्म के धारण करने को कहते हैं। इससे स्पष्ट हो गया कि वेदानुसार श्रेष्ठ गुणों को धारण करने वाले मनुष्य व उनका समाज, की संज्ञा आर्य समाज है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि आर्य समाज अपने आप में एक धर्म भी है। यह बात अलग है कि आर्य समाज के अनुयायी शत-प्रतिशत वेद के अनुसार जीवन व्यतीत करते हों। अत: आर्य समाज एक प्रकार से वैदिक धर्म का पर्याय बन गया है। वेद एक प्रकार से मानवीय गुणों की आचार संहिता है और आर्य समाज उन गुणों का प्रचारक संगठन व आन्दोलन है।.....***

पृष्ठ 2 का शेष

भरत का त्याग, आदर्श भ्रातृभक्ति और हृदय की पवित्रता संसार के इतिहास में कहीं नहीं मिलेगी। भरत कुविचार वाली अपनी माता को वैरिन समझते हैं। उन्हें राजभोग, सुख-विलास कुछ अच्छा नहीं लगा। राजगद्दी राम और भरत के बीच ऐसे एक-दूसरे की ओर फेंकी जा रही है जैसे बच्चे गेंद उछालते हैं। भरत को राज्य की चाह नहीं है, राम अपने संकल्प एवं वचन पर अडिग है। इस त्याग ने दोनों को महान् बना दिया। जहाँ त्याग की भावना रहती है, वहाँ प्रेम, सौहार्द, सम्मान और आदर्श रहते हैं।

भरत द्वारा राम की पादुकाएँ राज सिंहासन पर रखकर सेवक की तरह कार्य करना राजनीतिज्ञों को आदर्श शिक्षा दे रहा है कि स्वार्थ व व्यक्तिगत द्वेषों से ऊपर उठें और जीवन में त्याग की भावना लाएँ। तभी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। लोभ एवं स्वार्थ से ऊपर उठकर ही सच्ची सेवा हो सकती है। इसके पश्चात् राम, सीता और लक्ष्मण का तपस्वी वेष में, तृण-कुटिया बनाकर चित्रकूट में निवास करना वर्णित है। वे कन्द, मूल और फल खाते और तपस्वियों की तरह संध्या-यज्ञ एवं ऋषि-मुनियों की रक्षा करते हुए जीवन व्यतीत करने लगे। इसी अवसर पर रावण की बहिन शूर्पणखा का श्रीरामचन्द्र जी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखने, श्रीराम द्वारा मना करने, अधिक हठ करने और सीता को मारने तक का उद्योग करने पर लक्ष्मण द्वारा उसकी नाक काट लेना आदि का वर्णन है।

उक्त घटना से प्रेरणा मिलती है कि जैसे राम अपनी पत्नी सीता से ही सन्तुष्ट और पत्नीव्रती थे, ऐसे ही यदि हम सुखी रहना चाहते हैं तो हमें भी पत्नीव्रती बनना चाहिए। राम परस्त्रीगमन को अत्यन्त निकृष्ट और कुमार्गगामी मानते थे। वे एक स्त्री से अधिक से विवाह करना, पाप, अधर्म, मर्यादाहीनता और समाज को दूषित करना मानते थे।

आज के सभ्य समाज में ये दोनों रोग भयंकर रूप से फैल रहे हैं। परस्त्री के भोग की प्रवृत्ति से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र टूट रहे हैं। इससे अनेक बुराइयाँ फैल रही हैं। आज के मानव-समाज में भोग-वासना की विकृतियाँ तेजी से फैल रही हैं। परिणाम सामने हैं। जब तक व्यक्ति नियम, संयम, मर्यादा, नैतिक मूल्य, धार्मिकता आदि नहीं अपनाएँगे, तब तक सुधार नहीं होगा। यह आग अन्दर-ही-अन्दर समाज को खाए जा रही है। एक से अधिक विवाह करने की बीमारी भी हमारे सभ्य समाज में पनप रही है। इसीलिए मानव दानव बनकर वासना का कीड़ा बनता जा रहा है। उसका शील, सदाचार, मर्यादाएँ एवं आदर्श टूट रहे हैं। राम के जीवन का यह आदर्श इस घातक रोग से हमें छुड़ा सकता है।

पंचवटी के आस-पास कई बड़े-बड़े राक्षस रहते थे। इन राक्षसों में रावण का मित्र मारीच था। वह बड़ा धूर्त और विचित्र वेश बनाने में निपुण था। मारीच सोने के हिरण का वेश बनाकर राम की कुटिया के आगे से होकर निकला। सीता उस सुन्दर मृग को देखकर मोहित हो गई। उसने राम से कहा- ' इसे पकड़ लाइए। यह हमारी क्रीड़ा के लिए रहेगा। वनवास की समाप्ति पर मैं इसे साथ ले जाऊंगी।' इत्यादि। राम लक्ष्मण को कुटी पर सीता की रक्षा के लिए छोड़कर मायावी मृग के पीछे दौड़े। कुटी आँख से ओझल हो गई। राम ने उस मायावी मृग को बाण मारकर समाप्त कर दिया। मरते समय वह चिल्लाया - हाय लक्ष्मण, हाय सीता।

यह आवाज सुनकर सीता चिन्तित हो उठी। लक्ष्मण ने बहुत समझाया कि यह राम की आवाज नहीं है। यह मायावी मृग की माया है। सीता ने लक्ष्मण को जोर-जबरदस्ती डाँटकर राम की सहायता के लिए भेज दिया। लक्ष्मण के जाते ही रावण साधु का वेश बनाकर सीता के पास भिक्षा के लिए आया। कुटी से बाहर सीता के आते ही उन्हें उठाकर लंका की ओर ले गया। इस घटना से हमें सीख लेनी चाहिए कि किसी के बाह्य स्वरूप पर तुरन्त विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। पहले सोच-विचार करके और प्रसंग समझकर ही आगे बात करें। आज हमारे समाज में बहुत लोग ढोंगी, पाखण्डी तथा दिखावटी साधु बन रहे हैं। कदम-कदम पर धोखा, छल, असत्य, प्रपंच हो रहा है। ऊपर से साधु नजर आते हैं अन्दर से पूरे स्वादु हैं। स्त्रियों में श्रद्धा-सेवा की भावना अधिक होती है, वे जल्दी ही बहकावे में आ जाती हैं। रामायण कह रही है- "नकली ढोंगी, पाखण्डी, कामी और लालची गुरुओं, महन्तों तथा महाराजों से बचो। किसी की हत्या कर दी और भगवे कपड़े पहनकर साधु बन गए। भोली-भाली स्त्रियों को ठगने, चुराने, भगाने की घटनाएँ प्रतिदिन हो रही हैं। किसी को नकली चीज दिखाकर असली पैसे लिए जा रहे हैं। हर चीज में नकलीपन है। अन्दर कुछ है और बाहर कुछ दिखाया जा रहा है। आज का आदमी अन्दर से पूरा छली, प्रपंची, ढोंगी, दिखावटी तथा स्वार्थी है। ऊपर से बड़ा सौम्य, सरल, धर्मात्मा सज्जन बन रहा है। रामायण यह कहती है कि दुनिया में आँखें खोलकर चलो। बुद्धि और विवेक से काम लो। दिखावटी, चमकीली, भड़कीली चीजों से दूर रहो।

सीता-हरण प्रसंग से प्रेरणा और संकल्प लें कि हम अपने अन्दर आसुरी प्रवृत्ति को नहीं बढ़ने देंगे। हमारे अन्दर बैठा हुआ रावण दिन-रात सीता को खोजने और भगाने की योजना में रहता है। हम अपनी हृदय की धड़कनों पर हाथ रखकर देखें तो सही कि परनारी के प्रति हमारे भाव कितने अपवित्र और वासनात्मक हैं। पाप और वासनाएँ हृदय की पवित्रता को नष्ट कर रही हैं। चेहरे पर अतृप्ति, वासना और मलिनता है। आज समाज में नगर-नगर, गली-गली और घर-घर रावण बढ़ एवं पल रहे हैं।

राम एक आदर्श महापुरुष थे। परमात्मा या ब्रह्म नहीं थे। उनके कर्म, चरित्र और आदर्श इतने उच्च और महान् थे कि श्रद्धा-भक्ति तथा आदर में हम उन्हें भगवान् कहते है। किसी को भगवान् शब्द से सम्बोधन करना, सबसे बड़ा तथा उच्च सम्मान देना है। यदि वह भगवान् होते तो साधारण मनुष्य की तरह पशुओं-पक्षियों और लताओं तथा वृक्षों से विलाप करते हुए सीता का पता न पूछते। परमात्मा तो त्रिकालदर्शी है, वह भविष्य का भी ज्ञाता है, फिर रामचन्द्र जी को तो अपनी पत्नी सीता का पता भी नहीं था। श्रीराम के जीवन तथा आचरण में सभी देवोचित गुण, कर्म और स्वभाव थे। वे मानवता के आदर्श थे। उनके सभी कर्म लोक-संग्रह की भावना से सम्पन्न थे। अगर हम उन्हें एक आदर्श महामानव मानेंगे तो उनके चरित्र से बहुत कुछ सीख सकेंगे और उनके आदर्शों का अनुकरण कर सकेंगे। रामायण कहती है कि श्रीराम के समान अपना जीवन तथा व्यवहार बनाओ।

## श्रीराम नौमी

हिन्द में प्रतिवर्ष आती है, नौमी राम की।
राम का सुमरन करा जाती है नौमी राम की।।

किस तरह का माँ-बाप का सत्कार करना चाहिए।
किस तरह से भाई से प्यार करना चाहिए।।

किस तरह दोनों के प्रति उपकार करना चाहिए।
किस तरह से देश का उद्धार करना चाहिए।।

राम के ये गुण बता जाती है नौमी राम की।
राम का सुमरन करा जाती है नौमी राम की।।

चक्रवर्ती राज्य के पद के त्याग ने तीव्र त्याग।
बन में चौदह वर्ष बस जाने का था उत्तम विराग।।

बज रहा था जिस्म की रग-रग में सच्चाई का राग।।

याद यह बाते दिला जाती है नौमी राम की।
राम का सुमरन करा जाती है नौमी राम की।।

*- स्व. स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती*
*भू.पू.अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग, दिल्ली सभा*

किष्किन्धा में सीता अपने आभूषणों को पहचान के लिए फेंकती गई जिससे रामचन्द्र जी को उसे खोजने में प्रमाण मिल जाए। राम सीता के आभूषणों को हाथ में लेकर लक्ष्मण से पूछने लगे- 'ये आभूषण तुम्हारी भाभी के ही हैं न ?' इस पर लक्ष्मण ने बड़ी नम्रता-पूर्वक उत्तर दिया - "ऊपर के अंगों में पहने जाने वाले आभूषणों के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ। केवल पैरों के पायजेबों के सम्बन्ध में कह सकता हूँ कि ये माता सीता के ही हैं, क्योंकि प्रातः चरण-वन्दना करने के कारण इनकी मुझे पहचान है।" रामायण का यह प्रसंग आज के मनचले, कामी तथा वासनाओं में फँसे युवकों को पुकार-पुकार कर कह रहा है कि रामायण और रामलीला से कुछ सीखना है तो चरित्र-निर्माण और विचारों की उच्चता, दिव्यता एवं पवित्रता सीखो। हमारी आँखों में वासनाएँ भरी हैं। ऐसी दशा में लक्ष्मण का आदर्श एवं सात्विक चरित्र आज के कामुकता एवं वासना में लिप्त समाज को बहुत कुछ प्रेरणा और आदर्श दे सकता है।

रावण सीता को लंका की ओर लिए जा रहा था। सीता रथ से कूदने लगी। तब रावण बोला - "थोड़ी देर में लंका पहुँच जाओगी। वहां ऐसे सुख-ऐश्वर्य मिलेंगे कि वन के जीवन को भूल जाओगी। कुटी के बदले आसमान को चूमता महल मिलेगा, जिसका फर्श चांदी का और दीवारें सोने की हैं और जहाँ गुलाब और कस्तूरी की सुगन्ध आठों पहर उठा करती है। एक भिखारी पति के बदले तुम्हें ऐसा पति मिलेगा जिसकी उपमा इस धरती पर नहीं है।" सीता बोली- **"छली, कपटी, जबान संभाल कर बोल। सती के साथ ऐसा व्यवहार तेरे काल का कारण बनेगा। तू अपने धन-ऐश्वर्य से मुझे लुभा नहीं सकता। मैं पतिव्रता हूँ। मेरे आराध्य राम ही हैं।"**

आज अपने को आधुनिक कहलाने वाली, भोग-विलास, शृंगार और ऐशो-आराम ही जिनके जीवन का लक्ष्य है, ऐसी नारियों को सीता का यह आदर्श चरित्र, त्याग तथा पतिव्रता धर्म नया जीवन दे सकता है। आज नारी अपनी भोगी, विलासी और शृंगारी प्रवृत्ति के कारण ही दासता की बेड़ियों में जकड़ी जा रही है। उसके जीवन से तप, त्याग और सेवा के आदर्श हटते जा रहे हैं। सीता में एक आदर्श नारी के सभी गुण विद्यमान थे। वह पत्नी, भाभी, माँ आदि सभी भूमिकाओं की कसौटी पर पूरी उतरी।

हनुमान् जी ने अनेक संकटों एवं कठिनाइयों को पार करके अशोक-वाटिका में सीता को रामनाम अंकित अंगूठी दी। हनुमान् जी एक कुशल सेनापति थे। उन्हें इच्छानुसार रूप बदलने और हल्का भारी हो जाने की सिद्धि प्राप्त थी। श्रीराम ने लक्ष्मण से हनुमान् के बारे में कहा था - 'अवश्य ही यह व्यक्ति वेदशास्त्रज्ञाता, व्याकरणवेत्ता, उच्चकोटि का विद्वान् और कुशाग्रबुद्धि है।' वस्तुतः हनुमान् जी बली, योद्धा और पूर्ण ब्रह्मचारी थे। उनके चरित्र में सच्चे मित्र और सेवक के गुण थे। उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगाकर मित्रता का मोल चुकाया। इसीलिए वे आज संसार में पूजित, सम्मानित एवं वन्दनीय हैं। ब्रह्मचर्य के पूर्ण व्रती हनुमान् जी में अद्भुत बल, शक्ति और साहस थे। हम अपने बच्चों को हनुमान् जी के आदर्श से बल, शक्ति, सेवा और सच्ची मित्रता आदि के प्रेरणादायक विचार दे सकते हैं।

राम रावण का घमासान युद्ध होता है। भयंकर नर-संहार में रावण का समूल कुल नष्ट हो जाता है। राम लंका का राज्य विभीषण को सौंपकर दलबल सहित अयोध्या लौट आते हैं। रावण पुलस्त्य ऋषि

*- जारी पृष्ठ 5 पर*

पृष्ठ 4 से आगे

का पौत्र था। शिव का परम भक्त था। वेदों और शास्त्रों का ज्ञाता था। किन्तु मांस-मदिरा और पर-स्त्री गमन से उसकी पदवी राक्षस हो गई थी। रावण आचार- विचार से पतित होकर सर्वनाश को प्राप्त हुआ। आज के मानव-समाज में रावण-वृत्ति तेजी से फैल रही है। आज का मानव दानव बनकर मांस, मदिरा, पर स्त्रीगमन, छल, प्रपंच, अधर्म, पाप आदि बुराइयों को जीवन का अंग बनाता जा रहा है, किन्तु भूल रहा है कि गलत मान्यताओं और दुराचरण से अन्त में रावण की तरह विनाश ही होता है। अन्याय, अधर्म, असत्य और दानवीय वृत्तियाँ पहले तो रावण की तरह मनुष्यों को फलता-फूलता दिखाती है किन्तु अन्त में उसे समूल नष्ट कर देती हैं। अत: रावण के पतित चरित्र से आज के मानव को शिक्षा लेनी चाहिए। हमारा खान-पान, आचरण, जीविका और विचार और चिन्तन शुद्ध-पवित्र तथा धार्मिक होने चाहिएं। अपने महान् पुरुषों की शिक्षाओं, आदर्शों, परम्पराओं और जीवन-मूल्यों के प्रति हमारे मन में आस्था होनी चाहिए। श्री रामचन्द्र जी लंका की विजय के बाद लंका का राज्य स्वयं भोग सकते थे किन्तु बड़े सहज रूप से जिसका हक था उसे सौंप दिया। हमारी मनोवृत्ति दूसरे के अधिकार को छीनने की बनती जा रही है। राम का यह आदर्श-त्याग प्रेरणा देता है कि जीवन का सच्चा सुख, शान्ति और आनन्द यदि लेना चाहते हो तो जीवन में त्यागवृत्ति अपनाओ और पराए धन का लोभ मत करो।

संक्षेप में रामायण और राम का अमर सन्देश आज के भूले-भटके तथा राक्षसी-वृत्तियों की ओर बढ़ते मानव-समाज को यही है कि "अपने जीवन को उच्च, पवित्र, धार्मिक, तपस्वी, त्यागी एवं आदर्शपूर्ण बनाओ और बुरे विचारों व कर्मों का परित्याग करो। मांस, मदिरा, परस्त्रीगमन के आचरण से ऊपर उठो। आचरण को सुधारो।" श्रीराम तथा रामायण हमें संसार में कैसे जीना है, इसकी शिक्षा और मार्गदर्शन कदम-कदम पर दे रहे हैं। यदि मानव अपने इहलोक तथा परलोक - दोनों को सुधारना व सम्भालना चाहे तो श्रीराम का प्रेरक जीवन-चरित्र सबसे बड़ा आदर्श है।

महापुरुषों के जन्मदिन, पर्व, जयन्तियाँ आदि संसार को जगाने और संभलने की प्रेरणा देने आते हैं। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन आज के भूले-भटके मानव-समाज को सत्य, न्याय, धर्म, कर्त्तव्य, मर्यादा आदि की प्रेरणा प्रदान करता है। यदि हम उनके जीवन से अपने जीवन तथा परिवार को सुखी, प्रसन्न, शान्त और मंगलमय बना सकें, तभी उनके नाम-स्मरण, जय-जयकार, कीर्तन, पूजा-पाठ आदि की सफलता है, सार्थकता है।

*- बी.जे.29, शालीमार बाग, दिल्ली*

## अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा आसाम-नागालैण्ड में संचालित केन्द्रों का निरीक्षण

## महाशय धर्मपाल एमडी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, धनश्री में जुलाई, 2014 से होगा नए सत्र का आरम्भ

(बाएं) महाशय धर्मपाल एमडी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, धनश्री (आसाम) के नवनिर्मित भवन के प्रांगण में वृक्षारोपण की शुरुआत करती माता प्रेमलता शास्त्री जी। साथ में हैं आचार्य सन्तोष, श्री राजीव आर्य एवं श्री विनय आर्य जी। इस विद्यालय में जुलाई, 2014 से नए सत्र का आरम्भ किया जाना है। (दाएं) महर्षि दयानन्द छात्रावास दीमापुर (नागालैंड) में बच्चों के साथ माता प्रेमलता शास्त्री, धर्मपाल आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, मनोज गुलाटी, गोविन्दलाल अग्रवाल एवं श्री विनय आर्य जी। (नीचे) महर्षि दयानन्द छात्रावास (बोकाजान - आसाम) में बच्चों के साथ माता प्रेमलता शास्त्री, धर्मपाल आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, मनोज गुलाटी, गोविन्दलाल अग्रवाल एवं श्री विनय आर्य जी।

## शोक समाचार वैद्य राजाराम जिज्ञासु का निधन

आर्यसमाज बदायूं के वरिष्ठ सदस्य वैद्य राजाराम जिज्ञासु विद्यावाचस्पति का 22 मार्च को 91 वर्ष की अवस्था मे निधन हो गया। वे कर्मठ एवं समर्पित निष्ठावान आर्यपुरुष थे। वे आर्यसमाज एवं बदायूं जनपद की कई शिक्षण संस्थानों के पदाधिकारी रहे। गौरक्षा, हिन्दी आन्दोलन एवं शुद्धि सभा के कार्यों में वे सदैव अग्रणीय रहे। श्री जिज्ञासु जी ने 'स्वाध्याय संस्थान' के नाम से एक विशाल पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना की जिसमें लगभग 20 हजार से अधिक सन्दर्भ ग्रन्थ एवं सम्पूर्ण वैदिक वांड्मय है। वे अपने पीछे 5 पुत्रों एवं 9 पौत्रों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक**

## पुस्तक समीक्षा Swami Dayanand

### In the eyes of some distinguished scholars

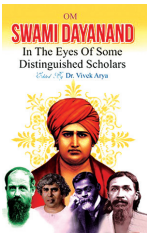


**प्रकाशक**- गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली **पृष्ठ** -96
**मूल्य** -75/- **भाषा**- अंग्रेजी
**संपादक**- डॉ. विवेक आर्य **समीक्षक :** ऋषिदेव आर्य

आर्यसमाज कि युवा पीढी में स्वाध्यायशील, शौधप्रवृति में रूचि रखने वाले डॉ. विवेक आर्य जो व्यवसाय से शिशु रोग विशेषज्ञ हैं द्वारा 1925 में मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर छपी पुस्तक को 90 वर्षों के पश्चात दोबारा से प्रकाशित किया गया हैं। इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द के विषय में उस काल कि विभूतियों द्वारा जो विचार लिखे गये थे यह पुस्तक उन्हीं लेखों का संग्रह हैं। योगी अरविन्द, ताराचन्द गाजरा, प्रोफेसर सुधाकर, प्रोफेसर चुन्नीलाल आनन्द, साधू वासवानी, एन्ड्रूस महोदय, प्रिंसिपल केलकर, प्रिंसिपल अरुण्डेल, प्रिंसिपल रूद्र, प्रिंसिपल रॉय, प्रिंसिपल थुडानी जैसी विभूतियों के महर्षि दयानन्द विषयक विचारों का संग्रह कुशल सम्पादन एवं फुटनोट्स के साथ प्रकाशित किया गया हैं। सम्पादक को उनके परिश्रम के लिए बधाई क्योंकि उनके द्वारा लिखी गई टिप्पणियों से यह पुस्तक पाठकों के लिए अधिक ग्राह्य बन गई हैं। अंग्रेजी पठित युवा पीढी के लिए यह पुस्तक महर्षि दयानन्द को विद्वानों कि दृष्टि से समझने का एक उत्तम प्रयास हैं। - *समीक्षक*

।। ओ३म्।।
गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

पृष्ठ 3 का शेष

## आर्यसमाज और वैदिक .....

सत्य सिद्ध किए सत्य मान लेने वाला युग अब समाप्त हो चुका है। जब उनसे शंका समाधान के लिए कहते हैं तो वह मौन धारण कर लेते हैं व निरुत्तर बने हुए हैं। ऐसी परिस्थिति में सत्य का प्रचार करना व उसे अन्यों से मनवाना कठिन हो जाता है। अत: आर्य समाज का कार्य इस प्रयास को करते रहना है कि वह विधर्मियों से वेदों की सत्य मान्यताओं को स्वीकार कराये और साथ ही उसे वेद प्रचार का कार्य जारी रखना है। सत्य के प्रचारक को सफलता अवश्य ही मिलती है। हो सकता है इसमें काफी समय लगे परन्तु निराशा का कोई स्थान नहीं होना चाहिये। हमें अपने सिद्धान्तों और मान्यताओं को सरल से सरलतम् करने पर भी विचार व कार्य करते रहना चाहिये। जब यह स्थिति आयेगी तो प्रचार का कार्य सरल हो जायेगा। इसके लिए हमें सामान्य मनुष्यों द्वारा बोली व समझी जाने वाली भाषा में रोचक रीति से साहित्य तैयार करना होगा। हम समझते हैं कि हमें ईश्वर के स्वरूप, उसके कार्यों, कर्म फल व्यवस्था, जीवात्मा का स्वरूप, वैदिक जीवन की विशेषतायें, जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य एवं उसकी प्राप्ति में वैदिक जीवन पद्धति का योगदान, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन का आधार वैदिक जीवन, मनुष्य जीवन व आत्मा का लक्ष्य, ईश्वर का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के उपाय, ईश्वर की प्राप्ति व जीवन-मरण के बन्धनों से मुक्ति के उपाय आदि अनेक विषयों पर सरल व छोटी पुस्तकें लिख कर उन्हें अधिक से अधिक लोगों में नि:शुल्क वितरित करनी चाहिये। ऐसा करने से लोग सत्य को जानेंगे और वह भी इसके लिए अन्यों से आग्रह करेंगे। इस प्रकार से हम देखते हैं कि आर्य समाज का सारा का सारा कार्य वेद से आरम्भ होकर, वेद के अन्तर्गत रहते हुए वेद के प्रचार-प्रसार से ही पूरा होता है। अत: आर्य समाज, वैदिक धर्म का पूरक एवं प्रभावशाली अंग हैं, इसके बिना वेदों की रक्षा व उनके प्रचार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसी क्रम में इतना और निवेदन कर दें कि आजकल दूरदर्शन पर स्वामी रामदेव जी वेदों का जम कर प्रचार करते हैं। हमें उनकी अनेक बातें सुनकर बड़ी प्रसन्नता होती है। कुछ बातें उन्हें जनता के लिए सिद्धान्तों से हटकर भी कहनी पड़ती हैं। परन्तु, वेद मत के विरोधियों की तुलना में, आज के समय में उनके द्वारा किया जा रहा कार्य हमें सराहनीय व प्रशंसनीय लगता है। आर्य समाज के एक अज्ञात गुरुकुल से निकलकर देश, समाज व विश्व में उन्होंने जो अपना स्थान बनाया है और मुख्यत: वेद प्रचार के क्षेत्र में वह जो कार्य कर रहे हैं, उसके लिए वह अभिनन्दनीय हैं।

अब हम देखते हैं कि वेदों के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज के सामने प्रमुख कठिनाइयां किस प्रकार की हैं? पहली कठिनाई तो यह कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सारे संसार के सम्मुख आर्य समाज का सत्य स्वरूप स्वयं प्रस्तुत किया है। इसके साथ उन्होंने प्राय: उनके समय उपस्थित सभी या अधिकांश मतों में पाई जाने वाली असत्य, प्रमाण, युक्ति व तर्क विरोधी बातों को प्रस्तुत कर उन्हें जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में असफल, असमर्थ व व्यर्थ होने को भी अनेक हेतुओं के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने सारी दुनियां को शास्त्रार्थ वा सत्य धर्म विवेक के लिए भी आहूत किया था। इसी से यह समझा जा सकता है कि यदि मत-मतान्तर सत्य होते तो वह स्वयं अपनी ताल ठोक कर उसे सत्य सिद्ध करते और महर्षि के विचारों व मान्यताओं का दिग्दर्शन कराकर उनका खण्डन कर उनसे शास्त्रार्थ करते और जो सत्य सामने आता उसे सभी प्रेमपूर्वक स्वीकार करते व अपनाते। अनेक अवसरों पर ऐसा हुआ भी परन्तु उन्होंने सत्य को स्वीकार कर अपने मत का त्याग व वैदिक धर्म को स्वीकार नहीं किया। इससे यह तो स्पष्ट ही है कि उन्हें अपने मत की खामियों, कमियों, त्रुटियों व असत्यता का ज्ञान हो चुका था व अब भी है अन्यथा उन्होंने महर्षि व वेद प्रदर्शित ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप, ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र-यज्ञ, 16 संस्कार, वैदिक जीवन शैली व पद्धति आदि का मौखिक व लिखित खण्डन किया होता। सत्य को स्वीकार न करने का कारण क्या है? जब इस प्रश्न पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि स्वमत से जो अनुचित स्वार्थ सिद्ध होते हैं, सत्य को स्वीकार करने से उनका त्याग होता है। स्वार्थ को बनाये रखना, उसका त्याग न करना ही सत्य मत को स्वीकार न करने का प्रमुख कारण है। जिस दिन मत-मतान्तरों के बड़े-बड़े लोग अपना स्वार्थ त्याग कर देगें और उनमें सत्य धर्म के प्रति आस्था, विश्वास, इच्छा, प्रवृत्ति, भावना, भूख व पिपासा उत्पन्न होगी उस दिन यह कार्य सम्भव होगा। यह भी कहना है कि किसी भी मत व मतान्तर के आम व्यक्ति को सत्य-असत्य, यथार्थ व अयथार्थ आदि से कुछ अधिक लेना देना नहीं होता। वह तो अपने धार्मिक नेताओं की ओर ही ताकते रहते हैं। वह जो भी कहेगें वही उसका अपना धर्म होता है। यह भी विदित होता है कि आज लोगों ने चालाकी सीख ली है। अपने असत्य को सत्य व दूसरे के सत्य को असत्य सिद्ध करने में लगे हुए हैं जिससे सामान्य व्यक्ति भ्रमित होता हे। इन कारणों से मत-मतान्तरों का अस्तित्व बना हुआ है। क्या यह स्थिति प्रलय तक रहेगी? ऐसा होना सम्भव ही नहीं है क्योंकि समय के साथ उतार-चढ़ाव, उत्थान व पतन होता रहता है। सत्य के आग्रही महापुरुष जन्म लेते रहते हैं और वह जितना जान पाते हैं उतना स्वयं भी मानते हैं और दूसरों से मनवाने के लिए भी प्रयास करते हैं। अपने प्राणों की रक्षा तक की उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती। समय-समय पर ऐसे महापुरुषों के होने व उनके कार्यों से ही आशा की जा सकती है कि सत्य धर्म वेदों की स्थापना का यह कार्य उनके द्वारा कालान्तर में अवश्य पूरा होगा। महर्षि दयानन्द को भी इसकी पूरी-पूरी आशा थी, शायद इसी कारण उन्होंने कितने काल में सारा विश्व आर्य व वैदिक धर्मी बनेगा इसकी परवाह नहीं की और अपना कार्य जारी रखा। उन्होंने अपने जीवन के एक-एक पल को दूसरों के हित व ईश्वर की आज्ञा पालन करने में व्यतीत किया। हमारा स्वयं व्यक्तिगत अनुभव है कि जब हम किसी सामाजिक कार्य में प्रवृत हुए तो हमें कालान्तर में वह सफलतायें मिली जिसकी हमने पूर्व में कल्पना भी नहीं की थी। इससे हमें यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि हमें अपने लक्ष्य की सत्यता व अपने पुरुषार्थ पर ध्यान देना चाहिये, सफलता तो लक्ष्य की सत्यता व पुरुषार्थ पर ही निर्भर करती है। हमें विदेशी बन्धुओं की इस बात पर भी आश्चर्य होता है कि उन्होंने यह तो मान लिया है कि संसार में सर्वप्रथम मनुष्य की उत्पत्ति भारत में हुई थी, उनके पूर्वज भारत में निवास करते थे और यहीं से वह सारे विश्व में फैले हैं, परन्तु जब आदि पुरुष व सबके पूर्वज भारत में रहते थे तो उनकी भाषा व ज्ञान भी तो भारत से ही वहां पहुंचा है। भाषा व ज्ञान में ही तो धर्म, कर्त्तव्य, विज्ञान व सभी विद्यायें निहित होती हैं। प्रमाणों से यह भी सिद्ध है कि विश्व में सबसे पुरानी पुस्तक वेद है जिससे यह भी सिद्ध है कि वैदिक शिक्षायें, मान्यतायें व सिद्धान्त ही धर्म, कर्त्तव्य, जीवन पद्धति, जीवन शैली आदि ही धर्म हैं। अब जब वेदों का सत्य स्वयं हमारे सामने है और वह सबके लिए ग्राह्य, उपादेय व प्रासंगिक है तो फिर उसे स्वीकार करने में संकोच क्यों करते हैं? क्यों उसे समाप्त करने व वैदिक धर्म के अनुयायियों को धर्मान्तरित करने की योजनायें बनाते हैं? क्यों नहीं तुलनात्मक अध्ययन कर सत्य को स्वीकार करते? इसका कारण वही स्वार्थ की भावना, अज्ञानता व इससे जनित हानिकारक विचार, मान्यतायें आदि हैं जो उन्हें ईश्वर, सत्य, ज्ञान, स्वोन्नति, कर्म-फल के सत्य सिद्धान्त के अनुसार पतन की ओर ले जा रही हैं। इससे उनका अकल्याण अवश्यम्भावी है। वह कुछ भी कहें परन्तु उनके व किसी के पाप क्षमा नहीं होंगे, वह पाप व पुण्य करने वाले को अपने-अपने कर्मानुसार अवश्यमेव भोगने ही होंगे। जिस व्यवस्था में बुरे काम व पाप क्षमा होते हैं, वह व्यवस्था पापों को बढ़ाने वाली होती है। पाप न हों अथवा कम से कम हों, इसके लिए तो पाप की कठोर व कठोरतम् सजा का प्रावधान न्यायसंगत एवं अति आवश्यक है। वैदिक धर्म में सृष्टि के आरम्भ से ऐसा ही है। अत: सबको विवेक से काम लेना होगा अन्यथा उसका परिणाम तो उन्हें स्वयं ही भोगना है। यही स्थिति हमारे देश के सभी मत-मतान्तरों के आचार्यों व उनके अनुयायियों पर भी लागू होती है जो वेदों को स्वीकार नहीं करते, उसके अनुरूप अपनी मान्यतायें, सिद्धान्त व रीति-रिवाज आदि नहीं बनाते और मुख्यत: वेद व अन्य धर्म-मतों से अपने मत की तुलना व सत्य व असत्य का अध्ययन व परीक्षा नहीं करते।

आर्य समाज की स्थापना एक प्रकार से सत्य-सनातन-नित्य-वैदिक-धर्म की पुनर्स्थापना थी जिसका श्रेय इतिहास में महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके अनुयायियों को है। इससे वैदिक धर्म व सत्य की रक्षा हुई व विश्व के लोगों को सत्याचरण व धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति मार्ग मिला। इस लाभ की किसी अन्य मत से कोई साम्यता या बराबरी नहीं है। महर्षि दयानन्द के आगमन व आर्य समाज की स्थापना होने से धर्म सम्बन्धी विषयों के चिन्तन, विचार, प्रचार, कर्मकाण्ड आदि पर नई सोच ने जन्म लिया। अनेक परिवर्तन, संशोधन आदि भी धर्म मतों की मान्यताओं व सिद्धान्तों में किये गये। आर्य समाज को जानने पर यह भी विदित होता है कि जब तक संसार में एक भी व्यक्ति वेद विरोधी व असहमति रखने वाला है, आर्य समाज प्रासंगिक रहेगा। यदि सभी आर्य समाज व वेदों के अनुसार जीवन व्यतीत करें, वेदों को सर्वोपरि माने, तब भी आर्य समाज का उत्तरदायित्व इस बात के लिए रहेगा कि वह सजगता से तब भी स्थितियों पर दृष्टि रखे जिससे पुन: उत्तर-महाभारतकालीन स्थिति, मध्यकाल की पुनरावृत्ति, न हो सके। आर्य समाज के स्थापना दिवस पर सभी आर्य समाज के अनुयायियों व सभी मतों सहित मानवमात्र को हमारी शुभकामनायें।

*- 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून (उत्तराखण्ड)-248001*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज मयूर विहार-1 का

## 31वां वार्षिकोत्सव समारोह

**16 से 20 अप्रैल, 2014**

**महिला सम्मेलन - 16 अप्रैल**

यज्ञ : प्रतिदिन प्रात: 7:30 से 9 बजे
ब्रह्मा : पं. वेदपाल जी
भजन : पं. गौरव शास्त्री जी
वेद कथा : रात्रि 8:30 से 9:30 बजे
**पूर्णाहुति एवं समापन : 20 अप्रैल**
राष्ट्र रक्षा सम्मेलन : 12 से 1:30 बजे
**वक्ता :** डॉ. सुधीर कुमार आर्य, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं श्री विनय आर्य
आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्रदान करें।

*- महेन्द्र कुमार चाठली, प्रधान*

## पुरोहित चाहिए

श्रद्धानन्द अनाथालय ट्रस्ट (रजि., कर्णताल, करनाल - 132001 (हरियाणा) को एक विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है, जिसने गुरुकुल पद्धति से शिक्षा ग्रहण किया हो और विवाहित हो। भोजन एवं आवास सुविधा नि:शुल्क एवं वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा। इच्छुक प्रार्थी अपने प्रमाण पत्र शीघ्र भेजें। *- महाप्रबन्धक,*
*मो. 9416456429*
shradhanandorphanage111@gmail.com

## आवश्यकता है

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फर नगर-251316(उ.प्र) को गुरुकुल में प्रबन्धकीय वेतन पर एक प्राचीन व्याकरण पढ़ाने हेतु व्याकर्णाचार्य, संरक्षक, रसोइया एवं कम्प्यूटर शिक्षक की आवश्यकता है। इच्छुक प्रार्थी अपने प्रमाण पत्र शीघ्र भेजें। *- आचार्य इन्द्रपाल, मुख्याधिष्ठाता, मो. 9411929528*

## प्रबन्धक चाहिए

आर्यसमाज सान्ताक्रुज, वी.पी. मार्ग, सान्ताक्रुज (पं.) मुम्बई-54 को कार्यालय हेतु एक योग्य अनुभवी प्रबन्धक की आवश्यकता है। प्रार्थी आर्यसमाज की विचारधारा से सहमत होना चाहिए और उन्हें इस कार्य के लिए 5 वर्ष का अनुभव आवश्यक है। वेतन के साथ आवासीय सुविधा भी प्रदान की जाएगी। प्रार्थी 15 दिनों के अन्दर प्रार्थना पत्र भेजें अथवा aryasamajsantacruz@hotmail.com/ aryasamajsantacruz@gmail.com पर ईमेल करें *- रमेश सिंह, मन्त्री*

## नव वर्ष पर यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज विज्ञान नगर में 6 अप्रैल रविवार को आचार्य अग्निमित्र तथा पं बिरधीलाल आर्य के ब्रह्मत्व में ग्यारह कुण्डीय यज्ञ किया गया जिसमें यजमानों ने वेदमंत्रों से प्राणिमात्र के कल्याण की कामना से विशेष आहुतियां प्रदान कीं।

यज्ञ के उपरांत आयोजित सभा में मुख्य अतिथि श्री गजेंद्र सिंह ने कहा कि राष्ट के उत्थान में महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होनें कहा मैंने बचपन में महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश पढी,जिससे मुझे प्रेरणा मिली और मैं अन्यों को भी इसे पढने को प्रेरित करता हूं। इस अवसर पर पं बिरधीचन्द ने कहा कि महर्षि दयानन्द के उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता। हमारा नववर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा से आरम्भ होता है, हमें अपनी संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

इस अवसर पर जिला सभा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा एवं आर्यसमाज विज्ञान नगर के मन्त्री श्री राकेश चड्ढा ने भी उपस्थित जन साधारण को सम्बोधित किया। *- जे. एस. दूबे, प्रधान*

## वैदिक विदुषी माता शन्नोदेवी का अमृत महोत्सव

ओड़िसा राज्य में विगत पचास वर्षों से वेद, यज्ञ और वैदिक संस्कारों का प्रचार-प्रसार में निरन्तर सक्रिय माता शन्नोदेवी का 75 पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव आर्यसमाज भुवनेश्वर के प्रांगण में संम्पन्न हुआ है। उत्सव में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (गुरुकुल आमसेना), डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी), आचार्य कमलेश अग्निहोत्री (अहमदाबाद), आचार्य सुकामा (गुरुकुल चोटिपुरा) तथा ओड़िसा के बहु संरक्षक समाज सेवी, राजनेता तथा बुद्धिजीवी माता जी का बहुमुखी प्रतिभा का वर्णन किया। माता जी अपने पतिदेव आर्य विद्वान इ. प्रियव्रत दास जी के साथ अमेरिका, इंगलैण्ड, होलैंड, मोरिशस, दक्षिण अफ्रिका आदि देशों में वेद प्रचार किया है। सुलेखिका, विदुषी पुरोहिता तथा उपदेशिका हैं।

*- प्रियव्रत दास, प्रधान, आर्यसमाज, भुवनेश्वर*

## आर्य वीर एवं आर्यवीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

| आर्यवीरों हेतु | आर्य वीरांगनाओं हेतु |
|---|---|
| **25 मई से 1 जून, 2014** | **18 मई से 25 मई, 2014** |
| **स्थान : डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, सैक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली-85** | **स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार, दिल्ली-95** |
| शिविर शुल्क 250/- रुपये प्रति शिविरार्थी | शिविर शुल्क 300/- रुपये प्रति शिविरार्थी |
| **उद्घाटन : 25 मई सायं 4 बजे** | **उद्घाटन : 18 मई सायं 4 बजे** |
| **समापन : 1 जून प्रात: 10 बजे से** | **समापन : 25 मई प्रात: 10 बजे से** |

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने बालक/बालिकाओं को व आर्य वीर/वीरांगना दल शाखा के प्रत्येक आर्यवीर एवं वीरांगना को शिविर मे भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

आर्यजन शिविरों के उद्घाटन एवं समापन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्यसमाज की युवा पीढ़ी को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

| निवेदक | जगवीर आर्य | बृहस्पति आर्य | सुनीति आर्या | लिपिका आर्या |
|---|---|---|---|---|
| | संचालक | महामन्त्री | संचालिका | मन्त्रणी |
| | 9810264634 | 9560343777 | 9868348663 | 9811203087 |

## समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

**आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा**
**समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित**

# नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

**नर्सरी से 12वीं कक्षा तक**

## आकर्षक छूट 25%

**बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।**

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001**
**☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com**

## प्रवेश सूचना

**आर्ष गुरुकुल आर्य नगर पहाडगंज, नई दिल्ली-110055** में नवीन सत्र 2014-15 के लिए 30 अप्रैल से प्रवेश आरम्भ हैं। प्रवेश के इच्छुक छात्र की योग्यता 5वीं पास होना चाहिए। लिखित एवं मौखिक परीक्षा देना अनिवार्य है। गुरुकुल में संस्कृत, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी, कम्प्यूटर इत्यादि विषय पढ़ाए जाते हैं, जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है। अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुल में प्रवेश हेतु अभिभावक यथाशीघ्र सम्पर्क करें।

*- आचार्य देवेन्द्र वर्णी, दूरभाष : 011-23514517, 8510995003*

**गुरुकुल वटुक विकास केन्द्र, अलियाबाद, मंडल'-शमीरपेठ, जिलां रंगरेड्डी, (आन्ध्र प्रदेश)** में नवीन सत्र 2014-15 के लिए 1 अप्रैल, 2014 से प्रेवश प्रारम्भ हो रहा है। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 5 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। पाठक्रम केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का होगा। दिनचर्या गुरुकुलीय होगी। शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, चिकित्सा आदि की व्यवस्था होगी। अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुल में प्रवेश हेतु अभिभावक यथाशीघ्र सम्पर्क करें।

*- आचार्य भवभूति आर्य, प्रधानाचार्य, 9390792645, 9392476077*

**गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, जिला- मुजफ्फर नगर (उ.प्र)** में नवीन सत्र 2014-15 के लिए प्रवेश प्रारम्भ हैं। प्रवेश हेतु कक्षा 5 पास होना अनिवार्य है।अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुल में प्रवेश हेतु अभिभावक यथाशीघ्र सम्पर्क करें।

*- प्रेमशंकर मिश्र, प्रधानाचार्य, 9411481624, 9997047680*

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में
## गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. आंवला कैडी 500 ग्राम | 160/- | 9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम | 32/- |
| (सूखा मुरब्बा) 1 किलो | 286/- | 10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम | 206/- |
| 2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो | 294/- | 11. आंवला रस 1 लीटर | 154/- |
| 3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम | 201/- | 12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा. | 259/- |
| 4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम | 111/- | **सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।** | |
| 5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम | 61/- | | |
| 6. गुलकन्द 250 ग्राम | 114/- | | |
| 7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम | 88/- | | |
| 8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम | 42/- | | |

**- महामन्त्री**

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 7 अप्रैल, 2014 से रविवार 13 अप्रैल, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10/11 अप्रैल, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 अप्रैल, 2014



## विश्वव्यापी आर्य समाज के आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएँ

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

**www.thearyasamaj.org**

अपनी संस्था की सूचनाएँ भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com


*प्रतिष्ठा में,*

## आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा **जून, 2014 मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क 1000/- रुपये** है।

पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। – ***सम्पादक***

**काव्य प्रेरणा**

## करो देश का ध्यान

ऋषियों का यह देश है, आर्यवर्त्त महान।
भारत की थी विश्व में, सबसे ऊंची शान।।
सबसे ऊंची शान, भारती थे उपकारी।
करती थी सम्मान, हमारा दुनिया सारी।।
वेदों का प्रचार, भारती तब करते थे।
सकर विश्व की पीर, भारती ही हरते थे।।
सबसे बड़ी विशेषता, ईश्वर के थे भक्त।

श्रेष्ठजनों को थे नरम, दुष्टों को थे सख्त।।
दुष्टों को थे सख्त, दया थी हर दिल अन्दर।
अन्दर से थे सही, ठीक जैसे थे बाहर।।
इसीलिए संसार सकल, करता था आदर।
आन-आन के धनी, यहां थे सब नर-नारी।।

सुनो सभी नर-नारियों आज काम की बात।
वेदों के पर पर चलो, बन्द करो उत्पात।
बन्द करो उत्पात, जगत में करो भलाई।
करो धर्म के काम, मार्ग है यह सुखदाई।
धीर-वीर बलवान बनो, मिल कदम बढ़ाओ।
राम-कृष्ण की तरह, जगत में आदर पाओ।।
लोक सभा का देश में, है अब सुना चुनाव।

घूम रहे बहुरुपिये, चला रहे हैं दांव।।
चला रहे हैं दांव, न ईश्वर से डरते हैं।
अपनी-अपनी धूर्त, बड़ाई सब करते हैं।।
जातिवाद का रोग, देश में बढ़ा रहे हैं।
खुदगर्जों को मूढ़, शीष पर चढ़ा रहे हैं।

आर्यजनों! अब है यही, सुनो हमारा धर्म।
सोच-समझकर के करें, हम सब अच्छे कर्म।
हम सब अच्छे कर्म, सभी कर्त्तव्य निभाएं।
जो हैं मानव श्रेष्ठ, उन्हीं को आगे लाएं।
करो देश का ध्यान, साथियों! कदम बढ़ाओ।।
आर्यवर्त्त को पुनः, जगत में गुरु बनाओ।।

– *पं. नन्दलाल निर्भय*
*ग्रा.+पो. बहीन, पलवल (हरियाणा)*

**सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर